



मेरा फरीदाबाद

फरीदाबाद, महाराष्ट्र, 10 निवांव 2024
www.nationalpraharnews.com

नेशनल प्रहरी दैनिक

अग्रवाल महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा किया गया अतिथि व्याख्यान का आयोजन

नेशनल प्रहरी/रघुबीर सिंह
बलभगदा। अग्रवाल महाविद्यालय नवलपांडी के इतिहास विभाग द्वारा आज 9 निवांव 2024 को एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का आयोजन अग्रवाल महाविद्यालय के प्राचीर्व ढेर सजीव कुमार गुप्ता की सदृश्यता से हुआ। अतिथि व्याख्यान का विषय-नुस्खा भारतीय इतिहास का स्वर्ण का रहा।

मुख्य वक्ता के रूप में गलनपैट वर्षीय मोहन, फलोदारद के प्राचीर्व ढेर सजीव सिंह गुप्ता थे। उन्होंने वेह जानकारी का व्यापारीकृत वर्तन्य किया। इस अतिथि व्याख्यान में महाविद्यालय के इतिहास विभाग के अंकुर छव्वेताहो ने भाग लिया।

अतिथि व्याख्यान का शुभारंभ इतिहास विभाग व अतिथि व्याख्यान के संयोजक ढेर जयप्रकाश सिंह ने कियायियों को मुख्य वक्ता ढेर सजीव सिंह गुप्ता के संस्कृत परिचय से किया। मुख्य वक्ता



ढेर सजीव सिंह गुप्ता ने अपने संवादमें कहा कि कला, साहित्य, विज्ञान और शास्त्र में उंड़े गए विद्यार्थीयों के कारण युस काल (लाप्ति 320-540 है) को धारत के स्वर्ण युग के रूप में जना जाता है।

तत्त्व धारत ने शही, समृद्ध और सांस्कृतिक उत्कर्ष का अनुष्ठान किया। उत्कृष्ट महिला, पुरुषों और प्रथिदृष्ट अनंता गुप्ता विद्यार्थीयों के नियोग के साथ कला और वाद्यकला नई ऊचाइयों पर पहुंच गई। संस्कृत साहित्य फला-फूला, कालिदास जैसे कवियों ने साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियों

का निर्माण किया, जबकि भार्मिक ग्रन्थ और दर्शन फले-फूले।

विज्ञान और गणित में, अध्यार्थित जैसे विद्वानों ने अनुत्तम योगदान दिया, जिसमें सूर्य की अवधारणा का विकास और खोजील विज्ञान में प्राचीन शास्त्रिय है। इस अवधी में यिस गहननीतिक ज्यवस्था और आर्थिक समृद्धि द्वारा समर्थित चिकित्सा, घात विज्ञान और ज्यात्रा में भी प्रगति देखी गई। गहन शास्त्रिय व्यापार में सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और जैदर्धी उत्कृष्टयों ने इसे स्वर्ण युग के रूप में स्वर्णी किया, जिसने यदियों तक भारतीय सभ्यता को प्रभावित किया।

अंत में विद्यार्थीयों ने व्याख्यान के विषय से जुड़े अंकुर प्रश्न पूछे। सभी जिज्ञासाओं का युख्य वक्ता ने समाप्तान किया। अतिथि व्याख्यान मुख्य वक्ता को उत्कृष्ट ज्ञान से सप्तस हुआ। इतिहास विभाग को सहायक प्रबन्धक ढेर सजीव गुप्ता ने व्याख्यान के आयोजन में विशेष सहयोग किया।

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में प्रसारित हरियाणा का हिन्दी दैनिक



सत्यजय टाईम्स



वर्ष-13, अंक-251 मंगलवार 10 सितंबर, 2024, पृष्ठ 8, मूल्य 2 रुपये (फरीदाबाद से प्रकाशित) प्राप्तकालीन संस्करण हिन्दी दैनिक

RNI NO HARHIN/2012/43543 Ph. 0129- 4042533, Email: sjtfaridabad@gmail.com ▶ Satyajay Times satyajaytimes

अतिथि व्याख्यान का आयोजन



बदला भगवा, 09 सितंबर, सत्यजय टाईम्स/गोपाल अरोड़ा। अबगल महाविद्यालय बदलाभगवा के इतिहास विभाग द्वारा एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का आयोजन अपालत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संजीव कुमार शुल्क की सदृश्यता से हुआ। अतिथि व्याख्यान का विषय - "तुल कला: भारतीय हित्यास का स्वर्ण तुल" था। मुख्य वक्ता के स्वयं में गणराज्य कलाओं मोहन, फरीदाबाद के प्राचार्य डॉ जगद्वार सिंह शुल्क थे। उन्होंने बेलद ज्ञानवर्षीय व सारनविधि वक्तव्य दिया। इस अतिथि व्याख्यान के महाविद्यालय के इतिहास विभाग के उन्नेक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अतिथि व्याख्यान का शुभारंभ इतिहास विषयाख्यात व अतिथि व्याख्यान के संयोजक डॉ जगद्वार सिंह ने शिक्षाविदों द्वारा मुख्य वक्ता डॉ जगद्वार सिंह शुल्क के संक्षिप्त वीचार से किया। मुख्य वक्ता डॉ जगद्वार सिंह शुल्क ने अपने संवादन में कला कि जल्द, साहित्य, विज्ञान और जीवन में उत्तोक्षीण उपलब्धियों के कारण गुप्त कला को बालत के स्वर्ण तुल के स्वयं में जन्म जाता है। चंद्रगुप्ता प्रथम, समुद्रतुल और चंद्रतुल द्वितीय जैसे जीवकर्ते के लक्ष भारत ने रखी, समृद्धि और संस्कृतिक उत्कर्ष का अनुभव किया। उत्कृष्ट महिलों, महिलों और प्रसिद्ध अजला गुक निर्दों के निर्माण के साथ कला और व्याख्यान की उत्तमता पर पहुंच गई।

संस्कृत साहित्य फला-पूला, वालिहास जैसे कलियों ने साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण किया, जबकि शार्मिक ग्रंथ और दर्शन फलो-फूले। विज्ञान और विज्ञान में, अवैश्वजू जैसे शिल्पों ने अनुलूपूर्व गोपनीय दिया, जिसमें शूल की अवधारणा का विकास और खोलो विज्ञान में प्रगति रखिया है। इस अवधि में शिशर शाजनीलिक व्यवस्था और अवधिक समृद्धि द्वारा समर्थित चिकित्सा, जातु विज्ञान और व्यापार में भी प्रगति देखी गई। गुप्त साम्राज्य की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और बौद्धिक उपलब्धियों ने इसे स्वर्ण तुल के स्वयं में स्वस्त्रि विलास, जिसने सादियों तक भारतीय सभ्यता को जगायित किया।



INDUSTRY (इंडस्ट्री)

हरियाणा-NCR

पॉलिटिक्स

स्पोर्ट्स

देश-प्रदेश

एंटरटेनमेंट

CRIME (क्राइम)

जनतंत्र टुडे



EDUCATION-एज्युकेशन

हरियाणा-NCR

अग्रवाल महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन

11 hours ago jantantar today #haryana #faridabad

फरीदाबाद जनतंत्र टुडे / अगवाल महाविद्यालय बल्लभगढ़ के इतिहास विभाग द्वारा एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का आयोजन अगवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संजीव कुमारगुप्ता जी की सदृप्रेरणा से हुआ। अतिथि व्याख्यान का विषय-“गृन्त काल: भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग” रहा। मुख्य वक्ता के रूप में गवर्नरमेंट कॉलेज मोहना, फरीदाबाद के प्राचार्य डॉ शमशेर सिंह गुलियाथे। उन्होंने बेहद जानबर्धक व सारगमित वक्तव्य दिया।

इस अतिथि व्याख्यान में महाविद्यालय के इतिहास विभाग के अनेक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अतिथि व्याख्यान का शुभारंभ इतिहास विभागाध्यक्ष व अतिथि व्याख्यान के संयोजक डॉ जयपाल सिंह ने विद्यार्थियों को मुख्य वक्ता डॉ शमशेर सिंह गुलिया केसंक्षिन्त परिचय से किया। मुख्य वक्ता डॉ शमशेर सिंह गुलियाने अपने संबोधन में कहा कि कला, साहित्य, विज्ञान और शासन में उल्लेखनीय उपलब्धियों के कारण गृन्त काल (लगभग 320-540 ई.) को भारत के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है। चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) जैसे शासकों के तरह भारत ने शांति, समृद्धि और सांस्कृतिक उत्कर्ष का अनुभव किया। उत्कृष्ट मंदिरों, सूर्तियों और प्रसिद्ध अजंता गुफा चित्रों के निर्माण के साथ कला और वास्तुकला नहं कंचाङ्गों पर पहुंच गईं। संस्कृत साहित्य फला-फूला, कालिदास जैसे कवियों ने साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण किया, जबकि धार्मिक ग्रंथ और दर्शन फले-फूले।

विज्ञान और गणित में, आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने अभूतपूर्व योगदान दिया, जिसमें शून्य की अवधारणा का विकास और खगोल विज्ञान में प्रगति शामिल है। इस अवधि में स्थिर राजनीतिक व्यवस्था और आर्थिक समृद्धि द्वारा समर्थित चिकित्सा, धातु विज्ञान और व्यापार में भी प्रगति देखी गई। गृन्त सामाज्य की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और बौद्धिक उपलब्धियों ने इसे स्वर्ण युग के रूप में ख्याति दिलाई, जिसने सदियों तक भारतीय सभ्यता को प्रभावित किया।

अंत में विद्यार्थियों ने व्याख्यान के विषय से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे। सभी जिजाराओं का मुख्य वक्ता ने समाधान किया। अतिथि व्याख्यान मुख्य वक्ता को धन्यवाद जापन से समाप्त हुआ। इतिहास विभाग की सहायक प्रबक्ता डॉ सुप्रिया ढांडा ने व्याख्यान के आयोजन में विशेष सहयोग दिया।